"ईमान कायम रखना"

जून के शिविर में समाप्ति वाले दिन आशा बहन जी ने यह भजन मंच पर गाया था कि "ईमान कायम रखना" कहने को तो ये एक भजन है लेकिन मुझे तो लगता है कि इस भजन में जो कुछ कहा गया है यही वाणी का सार है। कितने सवाल यह भजन हम से कर रहा है "ईमान कायम रखना हादी कदमों चलना", "वाणी में सब कहा है सब एक हो के रहना", "मैं तो छुपा हूँ तुम में", "हम तुम जुदा नहीं है जब तक न मै बुलांऊ रुह की नजर से तकना"

अगर हम अपनी जिन्दगी में इस भजन पर अमल कर लें तो समझो हम में रहनी आ गई, हमारा मनुष्य जन्म सफल रहा, खेल मांगा, खेल का आनन्द लिया, सतगुरु चरणो में रहे सुन्दरसाथ की सेवा की। इस माया में रहते हुए तो हम यही कुछ ही कर सकते हैं अब हमें इन सवालों का जवाब खुद को देना है कि इन पर हम कितने खरे उतरते हैं।

ईमान कायम रखना:- हमें देखना हैं कि धनी पर हमारा ईमान कितना है दुख-सुख में क्या हमारा ईमान डोलता तो नहीं? क्या हम धनी को छोड़ कर किसी देवी देवता की पूजा तो नही करते? सतगुरु पर पूरा ईमान या बेशक इलम श्री कुलजम स्वरुप की वाणी पर कोई संशय तो नहीं है। सरकार श्री के भौतिक तन छोड़ने पर क्या हमारें ईमान मे कोई कमी तो नहीं आई इन बातों को सोचना है अगर इनमें से ये कोई कमी हमारे अन्दर है तो उसे दूर कर केवल अपने धनी पर व कुलजम स्परुप साहब की वाणी पर ईमान पक्का करना है और उस पर चलना है।

हादी कदमों पर चलना:- अब सरकारश्री का भौतिक तन हम से जुदा हो चुका है। जब तक सरकार श्री ज़ाहरी रुप में दुनिया में थे हमारे लिए हादी से कम नही थे, उनका हुक्म ही हमारे लिए धनी का हुक्म था। सरकार श्री ने हमे विरासत में बहुत कुछ दिया हे, वाणी, चर्चा, चितवन, श्री कुलजम स्वरुप का टीका, श्री बीतक साहब का टीका, अनुशासन, विशाल आाश्रम आदि सब कुछ दिया है। अब तो हमें हादी के कदमों पर चलना है, अपने सतगुरु के बताये रास्ते पर चलना है। छठा दिन मोमिनों का है अब हमें देखना है कि हम अपने सतगुरु द्वारा विरासत में दी गई चीजों को बढ़ाते हैं, उतना ही रखते है या कम करते हैं। आखिरी समय है, हांसी से बचना है तो अपनी मैं को मार कर अपने हादी के कदमो पर कदम रखो अर्थात वाणी के कहे अनुसार चलों क्योंकि सरकार श्री के अनुसार वाणी और चितवन का कोई विकल्प नहीं है।

Nijanand App

वाणी में सब कहा है :- अगर किसी विषय में कोई संशय हो किसी बात की समझ नहीं आ रही है, चर्चा सुनाने वाले की जो बात अच्छी लग रही हो उसे ग्रहण करो जिस चौपाई के अर्थ में आप को लगे कि यह सही नहीं है उस चौपाई को वाणी में निकालों और पूरा प्रकरण ध्यान से पढ़ो आप के संशय मिट जायंगे बेशक इलम श्री कुलजम स्वरुप पर कभी संशय मत लाओ चर्चा करने वालो के एक चौपाई पर अलग-अलग विचार हो सकते हैं जो उनकी समझ पर निर्भर करता है जैसे निजनाम श्री जी साहेब जी व श्री कृष्ण जी, सुन्दरसाथ जी आप तो पढ़े लिखे हैं परमधाम में न कोई कृष्ण नाम है न देवचन्द्र न मेहराज ठाकुर नाम है वाणी में श्री राज जी के बारे में धनी, पिया, श्रीराज, हक ही लिखा है श्री जी साहेब जी, श्री प्राणनाथ जी अब ज़ाहेर हुए, श्री कृष्ण तो पाँच हजार साल पहले जाहेर हो चुके हैं इसलिए किसी भी विषय में कोई संशय हो तो हमें वाणी मिली है उसका मंथन करो, अपने संशय मिटाओं।

सब एक हो कर रहना:- सरकार श्री के समय सब सुन्दरसाथ एक हो कर रहते थे और वास्तविकता है कि परमधाम में हम सब रुहें एक हैं सब इक्ट्ठी धनी चरणों में बैठी हैं सब ने मिलकर खेल मांगा परमधाम में एक दिली है यहा इस माया में एक दिली तो नामुमकिन है परन्तु हम सब एक हो कर चलें यह हमारे सतगुरु सरकार श्री की दिली इच्छा थी।उनके भौतिक तन छोड़ने के बाद शायद हर कोई 'सरकार श्री' बनना चाहता है (सुन्दरसाथ जी यह लेख पढ़ कर जरा अकेले में विचार करना) क्या सरकार श्री ने हमें जो ईलम, वाणी, ज्ञान, अनुशासन दिया है क्या हम आज उस को कायम रख पा रहें है? हमने उनसे जो कुछ लिया उसका बदला हम अपना मै पना जाहेर कर के चुका रहे है उन्होने हमें ज्ञान, ईलम दिया कि छठा दिन मोमनों का है यह ज्ञान सब इनके काम आयेगा मगर हम तो एक दूसरे की चर्चा में कमी ढूंढ रहे हैं आश्रम में अपना अलग मुकाम बनाने में लगे हुए है।सुन्दरसाथ जी अमीरी- गरीबी तो यहां ज्ञान से, ईलम से सुन्दरसाथ में यहां कभी- वृद्धि हो सकती है परन्तु परमधाम में हम सब एक हैं हाथ की उंगलिया मिल जाती है तो वह बन जाता है शक्तिशाली 'मुक्का' इसलिए हमें सब को मिल कर चलना है विचारों में मतभेद हो सकते हैं धनी के रास्ते में और आश्रम के कामो में हम अपना मैंपना लाए यही सब से बड़ी हासीं है वाणी की इस चौपाईयों को जरा ध्यान से पढ़ो:-

जब लग रहियोसाथ में, हो रहिये रेणू समान।
इत जागे को फल सही है, कोई चेतो चतुर सुजान।।
मेरी मेरी करत दुनी जात है, बोझ ब्रह्मण्ड सिर लेवे।
पाव पलक का न ही भरोसा, तो भी सिर सरजन को न देवे।।
जीवते मारिये आप को, यू शब्द पुकारत हक।
जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेगें मुनाफ़क।।

Nijanand App

सरकार श्री भौतिक तन छोड़ चुके हैं उनके तन से हमारा जो नाता था वह खत्म हो चुका है वास्तव में उनके तन का स्वरुप आज भी हमारी आंखो में समाया हुआ है हम अपने तन की आंखो से उनको नहीं देख पा रहे हैं अगर आत्मा की नज़र से देखतें तो आज भी सरकार श्री हमारे बीच हैं आत्म ही उनको पहचान सकती है तन से भले हमें छोड़ गये हैं लेकिन आत्मा के नाते से सरकार श्री कभी हम से जुदा नही हो सकते। दुनिया की आंखे में तो उन की जुदाई "सरकार श्री के तन की जुदाई" में रो सकती है लेकिन सुन्दरसाथ जी आत्म के नाते से मत रोना अर्थात विरह न करना कि सरकार श्री चले गये आत्मा के नाते से हम एक हैं एक रहेगें जब तक हम वापिस परमधाम नही जाते तन छोड़ने के विरह में आंसु मत बहाते रहना। इन आंसुओं को दुनियां मे छुपा कर रखना अपने धनी पर ईमान रखो वे जल्द ही हमे वापिस ले कर जायेंगे धनी ने तो परमधाम में कहा था कि रुहों तुम खेल में जा रही हो वहां तुम मुझे तो क्या अपने आप को भी भूल जाओगी तुम्हें अपनी और परमधाम की याद दिलाने के लिए मैं रसूल भेजूगां तुम उस पर ईमान लाना परमधाम में धनी और रुहों के बिना और कोई नहीं है रुहें खेल में आई, धनी ने स्वंम रसूल बन कर घर की और अपनी पहचान करवाई अब हमें अपने ईमान को हर स्थिति में पक्का रखना है और हादी के बताए रास्ते पर चलना है।

हके कहया रुहन को, जिन विध जाओ तुम भूल।
इश्क ईमान ल्याओ, मैं भेजुगां रसूल।।

दुनिया में एक तरफा दोस्ती एकतरफा प्यार कभी कामयाब नही होते हम तो माया मे आकर धनी को भूल बैठ थे लेकिन धनी एक तरफा प्यार हमें करते रहे अपनी रुहों को जगाने के लिए क्या-क्या नहीं किया। जब तक धनी और रुहों दोनो की तरफ से तड़प नही होगी तब तक.खेल खत्म नहीं होगा। अपने मैं पने को मिटाना होगा परमधाम में मैं पना आया अर्थात अपने ईशक को बड़ा कहा और बन गया खेल का कारण अब खेल में आकर फिर मै पने के पीछे लगे हैं। अगर परमधाम में ही अपनी मैं को मार लेते तो यह खेल न देखना पड़ता यहाँ हमें अपनी मैं को मार कर धनी से खेल खत्म करने की अर्जी करनी चाहिये। परन्तु सच्चाई यह है कि सुन्दरसाथ में हम अपनी मैं को कायम रखने के लिए हम कई प्रकार के पापड़ बेल रहे हैं। एक तरफ हम कहते हैं कि सरकार श्री हमारे बीच में है कही गये नहीं हैं गया है तो केवल तन क्या जो हम कर रहे है सरकार श्री हमें नही देख रहे क्या हम पहले उनके तन से डरते थे? जरा विचारो।

प्रणाम जी! (सन्दीप फाज़िलका)

Nijanand App